कथा सरिता

हर स्थिति में ढूंढ़ें समाधान

एक घर के पास काफी दिन से एक बड़ी इमारत का काम चल रहा था। वहां रोज़ मज़दूरों के छोटे-छोटे बच्चे एक दूसरे की शर्ट पकड़कर रेल-रेल का खेल खेलते थे।

रोज़ कोई बच्चा इंजिन बनता और बाकी बच्चे डिब्बे बनते थे। इंजिन और डिब्बे वाले बच्चे रोज़ बदल जाते, पर... केवल चड्डी पहना एक छोटा बच्चा हाथ में रखा कपड़ा घुमाते हुए रोज़ गार्ड बनता था।

एक दिन उन बच्चों को खेलते हुए रोज़ देखने वाले एक व्यक्ति ने कौतुहल से गार्ड बनने वाले बच्चे को पास बुलाकर पूछा....

बच्चे, तुम रोज़ गार्ड बनते हो। तुम्हें कभी इंजिन, कभी डिब्बा बनने की इच्छा नहीं होती? इस पर वो बच्चा बोला... बाबूजी, मेरे पास पहनने के लिए कोई शर्ट नहीं है। तो मेरे पीछे वाले बच्चे मुझे कैसे पकड़ेंगे... और मेरे पीछे कौन खड़ा रहेगा....? इसीलिए मैं रोज़ गार्ड बनकर ही खेल में हिस्सा लेता हूँ। ये बोलते समय मुझे उसकी आँखों में पानी दिखाई दिया।

वो बच्चा जीवन का एक बड़ा पाठ पढ़ा गया...।

अपना जीवन कभी भी परिपूर्ण नहीं होता। उसमें कोई न कोई कमी ज़रूर रहेगी...। वो बच्चा माँ-बाप से गुस्सा होकर रोते हुए बैठ सकता था। परन्तु ऐसा न करते हुए उसने परिस्थितियों का समाधान ढूंढ़ा। हम कितना रोते हैं? कभी अपने साँवले रंग के लिए, कभी छोटे कद के लिए, कभी पड़ोसी की बड़ी कार, कभी पड़ोसन के गले का हार, कभी अपने कम मार्क्स, कभी अंग्रेज़ी, कभी पर्सनालिटी, कभी नौकरी की मार तो कभी धंधे में मार...। हमें इससे बाहर आना पड़ता है.... ये जीवन है... इसे ऐसे ही जीना पड़ता है। चील की ऊँची उड़ान देखकर चिड़िया कभी डिप्रेशन में नहीं आती, वो अपने आस्तित्व में मस्त रहती है। मगर इंसान, इंसान की ऊँची उड़ान देखकर बहुत जल्दी चिंता में आ जाता है। तुलना से बचें और खुश रहें । ना किसी से ईर्ष्या, ना किसी से कोई होड़, मेरी अपनी हैं मंज़िलें, मेरी अपनी दौड़..। परिस्थितियां कभी समस्या नहीं बनती, समस्या इसलिए बनती है, क्योंकि हमें उन परिस्थितियों से लड़ना नहीं आता।

कर्म की दीवार हो मज़बूत

एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से कहा कि प्रभु, मैंने पृथ्वी पर देखा है कि जो व्यक्ति पहले से ही अपने प्रारब्ध से दु:खी है आप उसे और ज़्यादा दु:ख प्रदान करते हैं और जो सुख में है आप उसे दु:ख नहीं देते हैं। भगवान ने इस बात को समझाने के लिए माता पार्वती को धरती पर चलने के लिए कहा और दोनों ने इंसानी रूप में पति-पत्नी का रूप लिया और एक गांव के पास डेरा जमाया। शाम के समय भगवान ने माता पार्वती से कहा कि हम मनुष्य रूप में यहां आए हैं, इसलिए यहां के नियमों का पालन करते हुए हमें यहां भोजन करना होगा। इसलिए मैं भोजन की सामग्री की व्यवस्था करता हूँ, तब तक तुम चूल्हा बनाओ। भगवान के जाते ही माता पार्वती रसोई में चूल्हे को बनाने के लिए बाहर से ईंटें लेने गईं और गांव में कुछ जर्जर हो चुके मकानों से ईंटें लाकर चूल्हा तैयार कर दिया। चूल्हा तैयार होते ही भगवान वहां पर बिना कुछ लाए ही प्रकट हो गए। माता पार्वती ने उनसे कहा कि आप तो कुछ लेकर नहीं आए, भोजन कैसे बनेगा? भगवान ने माता पार्वती से पूछा कि तुम चूल्हा बनाने के लिए इन ईंटों को कहाँ से लेकर आई? तो माता पार्वती ने कहा - प्रभु इस गांव में बहुत से ऐसे घर भी हैं जिनका रख रखाव सही ढंग से नहीं हो रहा है। उनकी जर्जर हो चुकी दीवारों से मैं ईंटें निकाल कर ले आई। भगवान ने फिर कहा - जो घर पहले से ख़राब थे तुमने उन्हें और खराब कर दिया। तुम ईंटें सही घरों की दीवार से भी तो ला सकती थी। माता पार्वती बोलीं - प्रभु उन घरों में रहने वाले लोगों ने उनका रख रखाव बहुत सही तरीके से किया है और वो घर सुंदर भी लग रहे हैं। ऐसे में उनकी सुंदरता को बिगाड़ना उचित नहीं होता। भगवान बोले - पार्वती यही तुम्हारे द्वारा पूछे गए प्रश्न का उत्तर है। जिन लोगों ने अपने घर का रख रखाव अच्छी तरह से किया है यानि सही कर्मों से अपने जीवन को सुंदर बना रखा है, उन लोगों को दु:ख कैसे हो सकता है! मनुष्य जीवन में जो भी सुखी है वो अपने कर्मों के द्वारा सुखी है, और जो दु:खी है वो अपने कर्मों के द्वारा दु:खी है। इसलिए हर एक मनुष्य को अपने जीवन में ऐसे ही कर्म करने चाहिए कि, जिससे इतनी मज़बूत व खूबसूरत इमारत खड़ी हो कि कभी भी कोई भी उसकी एक ईंट भी निकालने न पाए। प्रिय बंधुओं व मित्रों, यह काम ज़रा भी मुश्किल नहीं है। केवल सकारात्मक सोच और नि:स्वार्थ भावना की आवश्यकता है। इसलिए जीवन में हमेशा सही रास्ते का ही चयन करें और उसी पर चलें।

लखनऊ-उ.प्र.। डेप्युटी चीफ मिनिस्टर डॉ. दिनेश शर्मा तथा उनकी धर्मपत्नी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. माधुरी। साथ हैं ब्र.कु. दिव्या।

भरतपुर-राज.। पर्यटन राज्यमंत्री कृष्णेन्द्र सिंह कोली को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बबिता, ब्र.कु. संतोष, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य।

मोहाली-पंजाब। रक्षाबंधन का महत्व बताने के पश्चात् पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अंजू।

जयपुर-राज.। रक्षाबंधन के पावन पर्व पर कांग्रेस सचिव हरीश यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चन्द्रकला।

गोरखपुर-उ.प्र.। कमिश्नर अनिल कुमार,आई.ए.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दुर्गा।

दिल्ली-लॉरेन्स रोड। रामपुरा के एस.डी.एम.अमित शौरा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु.सारिका।

फिरोज़ाबाद-उ.प्र.। एम.एल.सी. दिलीप यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता।

दिल्ली-डिफेन्स कॉलोनी। अजय कुमार लाल (ज्वाइंट सेक्रेटरी,डिर्पाटमेंट ऑफ जस्टिस,मिनिस्ट्री ऑफ लॉ) को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. अंजना तथा ब्र.कु. अनुज।

बहल-हरियाणा। बी.आर.सी.एम. पब्लिक स्कूल विद्याग्राम की प्रिन्सीपल निशी राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. शकुन्तला।

फरीदाबाद। रेनू बाली,डायरेक्टर,टेन्डर हर्ट, एन.जी.ओ. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मीनाक्षी।

दिल्ली-पश्चिम विहार। डॉ. धर्मेन्द्र सैनी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्रह्माकुमारी बहनें।

चुनार-उ.प्र.। रक्षाबंधन कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में थाना प्रभारी एस.ओ. विजय कुमार सिंह, एस.आई. नरेन्द्र सिंह, एस.आई. प्रवीण कुमार राय, ब्र.कु. कुसुम तथा अन्य।

रूरा-उ.प्र.। जेलर राजेश पाण्डेय को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रीति।

समस्तीपुर-विहार। एस.डी.ओ. सुवीर रंजन को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात प्रदान करते हुए ब्र.कु.रंजना।

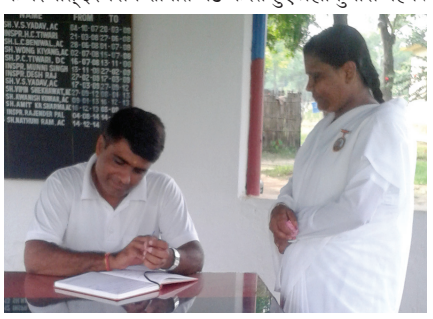

इस्लामपुर-प.बंगाल। बी.एस.एफ. 121 बटालियन के ए.सी. अवनीश कुमार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् उनके साथ ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

सूरतगढ़-राज.। सी.आर.पी.एफ. के ऑफीसर्स तथा जवानों को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् समूह चित्र में उनके साथ ब्र.कु. रानी तथा अन्य।